श्री शांतिदास प्रणीत संस्कृत शांतिनाथ विधान का पद्यानुवाद

श्री शांतिनाथ विधान

हिन्दी पद्यानुवादक :

साहित्यरत्न पं. ताराचन्दजी जैन शास्त्री

रेवाड़ी (हरियाणा)

प्रकाशन

आगम प्रकाशन

5373 जैनपुरी, रेवाड़ी (हरियाणा)

ब्र. श्री शांतिदास प्रणीत संस्कृत शांतिनाथ विधान का पद्यानुवाद

कृति : **श्री शांतिनाथ विधान**

पद्यानुवाद : **साहित्यरत्न पं. श्री ताराचन्दजी जैन शास्त्री, रेवाड़ी।**

आशीर्वाद : **आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज**
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी एवं श्री चन्द्रसागरजी महाराज
पूज्य आर्यिका श्री 105 दृढ़मती माता जी (ससंघ)

सम्पादन : **डॉ. श्रीचन्द्र जैन, पूर्व प्रधानाचार्य,**
के. एल. पी. कालेज, रेवाड़ी (हरियाणा)

पुण्यार्जक : **पं. श्री ताराचन्द जैन शास्त्री, परिवार।**

: **श्री सुरेन्द्र कुमार जैन सुपुत्र श्री अनूपचन्द जैन**
श्रीमती अनिता जैन धर्मपत्नी श्री सुधीर कुमार जैन, सरधना।
श्रीमती रेखा जैन धर्मपत्नी श्री प्रवीण कुमार जैन, सरधना।

: **गुप्तदान**

संस्करण : प्रथम, जनवरी 2021

आवृत्ति : 5000 प्रतियाँ

मूल्य : सदुपयोग (15/- पुनर्प्रकाशन हेतु)

प्राप्ति स्थान : **अजित प्रसाद जैन**
5373, जैनपुरी, रेवाड़ी (मो.: 09896437271)

: **डॉ. महेन्द्र कुमार जैन,** सी-101, गेलेक्सी टॉवर्स,
ग्राण्डभगवती होटल के पास, एस. जी. रोड़, बोडकदेव,
अहमदाबाद, गुजरात। पिन-380054 मो. : 9824001106

: **अमर ग्रन्थालय**, श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2545744, मो. : 09425478846

: **ब्र. श्री राकेश जैन,** सिद्धायतन, महावीर नगर, खुरई रोड़,
सागर (म.प्र.) फोन : 09993155667

: **ब्र. जिनेश जैन,** साहित्य सदन, वर्णी गुरुकुल, मढ़ियाजी,
जबलपुर (म.प्र.) मो. : 09424690607

मुद्रक : **आरसी प्रैस,** नई दिल्ली, मो. : 9871196002

विषयानुक्रम

1.	प्रकाशकीय	4
2.	अपनी बात (आत्म कथ्य) पं. श्री ताराचन्द जैन, शास्त्री	7
3.	आद्य कथन- डॉ. श्रीचन्द्र जैन, पूर्व प्रधानाचार्य, के. एल, पी. कालेज, रेवाड़ी	9
4.	विधान	14
5.	आरती, श्री शान्तिनाथ भगवान् की	47
6.	आगम प्रकाशन की पुस्तकों की सूची	48

प्रकाशकीय

'श्री शान्तिनाथ विधान' सदैव जैन समाज में पूजन, आराधना का प्रमुख माध्यम रहा है। श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन, भक्ति, स्तुति आदि सभी अशुभ कर्मों को नष्ट करने वाली, विघ्नों को शान्त करने वाली एवं सुख-समृद्धि प्रदान करने वाली होती है। श्रावकों के जाने-अनजाने में हुए दोषों के प्रक्षालन हेतु यह 'श्री शान्तिनाथ विधान' मंगलकारी, अतिशयकारी है।

मूलरूप से संस्कृत में रचित इस विधान का हिन्दी पद्यानुवाद पं. श्री ताराचन्दजी जैन शास्त्री ने सन् 1962-63 में किया था। सन् 1964 में सर्वप्रथम यह विधान लाला धन्नामल जी जैन, अग्रवाल मैटल वर्क्स, ने श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नसियाँ जी रेवाड़ी में आदरणीय शास्त्री जी (रचयिता) के सानिध्य में करवाया। वर्तमान में इस विधान की लगभग 20 लाख प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

पं. श्री ताराचन्दजी शास्त्री का जन्म 25 अक्टूबर 1922 में मध्य प्रदेश के बीना जिले में हुआ था। शास्त्री जी सन् 1948 में रेवाड़ी की शिक्षण संस्था 'जैन हाई स्कूल' में संस्कृत-हिन्दी तथा जैनधर्म की शिक्षा प्रदान करने हेतु पधारे थे। शास्त्री जी ने रेवाड़ी में 'श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी' कुआँ वाला में नित्यप्रति प्रातः एवं सायंकाल, शास्त्र स्वाध्याय करने के साथ-साथ, जैन समाज तथा जैनेतर समाज को सुशिक्षित एवं संस्कारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका भी प्रदान की। पं. श्री ताराचन्दजी शास्त्री ने इस कृति के अतिरिक्त 'तीर्थंकर महावीर' (जीवन झांकी, पद्यमय), 'सन्त लालमन दास' व 'जय जवान-जय किसान' आदि की रचना भी की है। मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि आदरणीय शास्त्री जी से 'जैन हाई स्कूल' रेवाड़ी में मुझे

शिक्षा ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं उनको सादर नमन करता हूँ।

आदरणीय शास्त्री जी के ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ. महेन्द्र कुमार जैन दसवीं कक्षा तक मेरे सहपाठी रहे व मेरे चन्द घनिष्ठ मित्रों में से एक हैं। आपने ग्लासगो यूनिवर्सिटी, लंदन से टेक्सटाईल इंजीनियरिंग में डाक्टरेट की है। आप अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के हैं एवं दया-दान आदि में अग्रसर रहते हैं। प्रत्येक वर्ष सपरिवार संगीतमय श्री शान्तिनाथ विधान करवाते हैं। आप लम्बे समय से अहमदाबाद में निवास कर रहे हैं। आदरणीय शास्त्री जी के तीन सुपुत्र व एक सुपुत्री है। सभी उच्च शिक्षा प्राप्त हैं व अच्छी स्थिति में जीवन यापन कर रहे हैं।

'श्री शान्तिनाथ विधान' के अनगिणित संस्करण विभिन्न रूपों में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रतिष्ठाचार्य श्रीमान पं. सनत कुमार विनोद कुमार जी जैन (रजवाँस, सागर, म.प्र.) ने इस विधान के पद्यों का सरलार्थ किया है जो 'पं. श्री कपूरचन्द्र जैन स्मृति न्यास' (रजवाँस, सागर, म.प्र.) से प्रकाशित हुआ है।

इस विधान के संस्कृत और हिन्दी रूपान्तर में एक बार ही स्थापना, अष्टक आदि दिया है किन्तु कालान्तर में अनेक प्रकाशनों में चारों वलयों में अलग-अलग स्थापना प्रकाशित होना प्रारम्भ हो गया। जो विचारणीय है-

1. स्थापना के बाद अष्टद्रव्य से पूजन होती है। जबकि वलयों में स्थापना के बाद अष्टक नहीं अपितु अर्घ्यावली प्रारम्भ हो जाती है।

2. भगवान् का आह्वान, स्थापना और सन्निधिकरण करने के बाद बिना विसर्जन किए पुनः-पुनः आह्वान, स्थापना करते हैं, जो उचित प्रतीत नहीं होता है।

3. एक बार आह्वान, स्थापना के बाद अष्टक और अर्घ्यावली के उपरान्त जयमाला दी गई है, यही उचित है अतः मूल परम्परा का अनुकरण करते हुए इस संस्करण में एक बार ही आह्वान, स्थापना दिया जा रहा है। अनेक विद्वानों का मत भी इस विधि की पुष्टि करता है।

इस विधान में एक पूजा, चार वलय में 120 अर्घ, 6 पूर्णार्घ, एक स्तवन और एक जयमाला है।

मैं श्रीमान डॉ. श्रीचन्द्र जैन जी का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस विधान के सम्पादन के साथ-साथ 'आद्य कथन' लिखकर हमें उपकृत किया है। इस विधान के प्रकाशन में सहयोगी रहे सभी प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोगियों का आभार प्रकट करता हूँ। इस विधान के प्रकाशन में अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करने वाले सभी बन्धु बधाई के पात्र हैं।

'आगम प्रकाशन', रेवाड़ी ने इस नवीन संस्करण को समुचित रीति से प्रकाशित करने का प्रयास किया है। पूर्ण विश्वास है कि यह आपके पूजन, भक्ति में सहायक होगा तथा आप विधान करके असीम पुण्यार्जन के सहभागी बनेंगे।

अजित प्रसाद जैन
संयोजक-आगम प्रकाशन

अपनी बात (आत्म कथ्य)

जैन धर्म में जहाँ आत्मज्ञान को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है, वहाँ भगवद्भक्ति का भी उल्लेखनीय स्थान है। आचार्य मानतुंग, कुन्दकुन्दाचार्य, मुनिवादिराज, कवि धनंजय आदि भक्ति स्तोत्रों के प्रमुख रचयिता हुए हैं। स्वामी समन्तभद्र सदृश उद्भट दार्शनिक आचार्यों ने भी अर्हद्भक्ति सम्बन्धी अनेक स्तोत्र-काव्य रचे हैं। स्वयम्भू स्तोत्र, देवागम स्तोत्र, युक्त्यनुशासन और जिनशतक उनकी प्रख्यात रचनाएँ हैं। भक्तामर स्तोत्र (आचार्य मानतुंग कृत) और कल्याण मन्दिर स्तोत्र (कुमुदचन्द्राचार्य कृत) तो सहस्रों भक्तजनों को कण्ठस्थ हैं और वे प्रतिदिन इन स्तोत्रों का पाठ करके ही आहार करते हैं।

जैन-दर्शन की मान्यतानुसार वीतराग भगवान किसी को कुछ नहीं देते, अतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि वीतराग की उपासना अथवा भक्ति से क्या सांसारिक दुःखों से छुटकारा हो सकता है? प्रश्न का समाधान यह है कि अर्हन्त के गुणों में अनुराग करने से हमारी कषाएँ मन्द होती हैं। शुभ परिणति जागृत होती है। अशुभ कर्म प्रवृत्तियों का शुभ रूप संक्रमण होता है। पाप प्रवृत्तियों का क्षय होता है तथा विशिष्ट पुण्य का बंध होता है। पुण्य के उदय से सांसारिक सुख उपलब्ध होते हैं। क्रम परम्परा से कषायों के उपशान्त होने पर आत्मा मोक्ष मार्ग पर लग जाती है। इस प्रकार अर्हद्भक्ति मोक्ष मार्ग की प्राप्ति का प्रमुख निमित्त भी है। यह एक निर्विवाद तथ्य है।

प्रस्तुत मूल रचना मुनि 108 श्री सकलकीर्ति जी महाराज के शिष्य कवि श्री जिनदास जी द्वारा संस्कृत भाषा में विरचित थी। जन-साधारण संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण विशेष

लाभान्वित होने में असमर्थ थे अतः 105 क्षुलल्क श्री आदिसागर जी की मंगलमयी सत्प्रेरणा से प्रभावित होकर मैंने इस रचना का राष्ट्र-भाषा हिन्दी में सरल पद्यानुवाद प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पूज्य क्षुल्लक जी का मैं हृदय से आभारी हूँ जो कि उन्होंने मूल रचना का हिन्दी में पद्यानुवाद करने के लिए मुझे प्रेरित किया।

मूल रचना में पृष्ठ 25 से 27 के 9 श्लोक बीजाक्षरों में समाविष्ट थे, मैं बीजाक्षर विद्या से पूर्ण भिज्ञ न होने के कारण उन श्लोकों को स्पष्टता न समझ सका, अतः मैंने उन्हें ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर दिया है। अग्रिम संस्करण में विद्वानों के समागम होने पर उन का यथार्थ पद्यानुवाद करने का प्रयास करूँगा।

अन्त में पद्यानुवाद के पाठकों तथा विधानकर्ताओं से मेरा नम्र निवेदन है कि यदि इस पद्यानुवाद रचना में प्रमाद अथवा अज्ञानता के कारण कोई त्रुटि रह गई हो तो उसकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करें, ताकि भविष्य में उन त्रुटियों का निराकरण तथा समुचित संशोधन हो सके।

भक्तिरस के इस मांगलिक विधान द्वारा जैन-समाज में पुण्य-भावनाओं का पवित्र स्रोत प्रवाहित होता रहे तथा मिथ्यात्व के अन्धकार का निराकरण हो, यही प्रस्तुत पद्यानुवाद रूप शांति विधान के प्रकाशन का मेरा प्रमुख प्रयोजन है।

ताराचन्द जैन

बसन्त पंचमी शास्त्री

वी.नि. सं. 2492

आद्य कथन

स्वदोष शान्त्या विहितात्मशान्तिः, शान्तेर्विधाता, शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश-भवोपशान्त्यैः, शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः॥

(श्री शान्तिनाथ भगवान् ने अपने अशुभ कर्मों को शान्त करके परम शान्ति को प्राप्त किया है तथा जो शरणागत जीवों को शान्ति प्रदान करने वाले हैं वे श्री शान्तिनाथ भगवान् मेरे जन्मादि-सांसारिक दुःखों और भयों की शान्ति के लिए शरण हैं।)

श्री शान्तिनाथ भगवान् समग्रकर्मों के बन्धनों से रहित (सर्वकर्मबन्धन-विमुक्त), सभी उत्तम मंगलों को प्रदान करने वाले (सर्वोत्तम-मंगल-प्रद), समस्त बाधाओं को दूर करने वाले (सर्वविघ्नविनाशक), सोलहवें तीर्थंकर (षोडशमतीर्थंकर), पाँचवें चक्रवर्ती (पञ्चमचक्रवर्ती) तथा बारहवें कामदेव (द्वादशमकामदेव) हैं जो शान्ति के नाथ अर्थात् स्वामी हैं। अतएव परम शान्ति के लिए ही इस विधान में श्री शान्तिनाथ जिनदेव की अर्चना की गई है। साहित्यिक दृष्टि से श्री शान्तिनाथ भगवान् अपने सांसारिक जीवन में शील, शक्ति और सौन्दर्य की जीवन्त अनुपम मूर्ति थे।

प्रस्तुत विधान, मूलतः संस्कृत-भाषा में विरचित है जिसके प्रणेता ब्र. श्री शान्तिदास कवि हैं जो मुनिश्रेष्ठ सकलकीर्ति महाराज के परम शिष्य थे। वर्तमान की अनेक कृतियों में लेखक का नाम श्री जिनदास जी मिलता है किन्तु संस्कृत शान्ति विधान की प्रशस्ति देखने से विदित होता है कि इस विधान के मूल लेखक ब्र. श्री शान्तिदास जी हैं। संस्कृत शान्ति विधान ब्र. श्री जिनदास जी व ब्र. श्री शान्तिदास जी का अलग-अलग भी हो सकता है, जो शोध का विषय है। प्रशस्ति इस प्रकार है-

..... सकलकीर्ति महामुनिनायकम्, सकलदिग्तटधीजनमान्यकम्।
सकल येन कृतं सुकवित्वकं, सकलभव्यजनस्य सुखदायकम् ॥6॥

तच्छिष्यजिनदासेन साधिता परमादरात्।
सेवाभक्तिसुभावेन कृतसिद्धिगुरोः कृपा।।7।।
तत्प्रभावेण दिक्चक्रं विद्वान्सर्वोपि मानितः।
रचितं रासिभाषादि पुराण संस्कृतादिकम्।।8।।
तस्य शिष्यमहामंदबुद्धिः केवलबालकः।
छंदं पिंगलव्याकरणं धातुरूपादिकं न मे।।9।।
शान्तिदासेति प्रख्यातो निर्बुद्धिश्च सभाजिरे।
सत्कविः पटुमतिर्विद्वान् हास्यं कृत्वा मुहुर्मुहुः।।10।।आदि...

इस विधान का हिन्दी भाषा में अनुवाद रेवाड़ी (हरियाणा) के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान् पं. ताराचन्दजी जैन शास्त्री ने किया था। संस्कृत की मूलप्रति विकृत (जीर्ण) होने पर भी पंडित जी ने यह विधान-गीता, दोहा, सोरठा, पद्धरि, चौपाई, घत्ता, शंभु, वसन्ततिलका आदि छन्दों में निबद्ध करके इसे संगीतात्मक, सरस, गेय तथा बोधगम्य बना दिया है। उसी कृति को यहाँ पर अंकित किया जा रहा है।

विधान संरचना व प्रयोजन

'विधान' शब्द 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'धा' धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाकर बना है-वि+धा+ल्युट् = विधान। जिसका अर्थ है-क्रम पूर्वक रखना, सम्यक् रचना करना आदि। दूसरे शब्दों में कहें तो विधान का अर्थ मांडना बनाकर जाप्य अनुष्ठान पूर्वक की जाने वाली विशिष्ट पूजन। प्रस्तुत विधान में विवेच्य विषय को विधि-पूर्वक अर्घ्य चढ़ाने के लिए चार वलयों (घेरों) में अंकित किया गया है। ये वलय कुछ चौड़ाई के साथ एक ही केन्द्र बिन्दु से निर्मित किए गये हैं। पूर्व-पूर्व वलय की अपेक्षा परवर्ती वलय की परिधि अधिक-अधिक होती जाती है। विधान की यह संरचना पूजा के अर्घ्यों को विधि पूर्वक चढ़ाने के लिए की गई है।

पूजा विधान का प्रयोजन बहिरात्मा को अन्तरात्मा की ओर ले जाना है। ये ही अन्तरात्मा को परमात्मा की ओर ले जाने का मूल साधन है।

प्रस्तुत विधान के प्रारम्भ में भगवन्त जिनेन्द्रों के प्रति श्रद्धापूर्वक प्रणति करते हुए एक संक्षिप्त प्रस्तावना है जिसमें बताया गया है कि भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में भारत के मथुरा नगर में सूर्यवंशी न्यायप्रिय वीर राजा शासन करता था। दुर्भाग्यवशात् एक बार वहाँ दुर्विपाक के प्रकोप से समस्त नगर में भयंकर उपद्रव व्याप्त हो गया। ग्राम देवता ने क्रोधित होकर चारों ओर व्याधि फैला दी। जिस कारण प्रजाजन नितप्रति काल कवलित होने लगे। इस दशा से भयभीत होकर राजा को अपने प्रजाजनों के साथ मथुरा छोड़नी पड़ी। तदनन्तर शुक्ल त्रयोदशी के दिन सेठ सुमति ने नगर में प्रवेश किया तो मांगलिक वर्षा को देखकर अतीव प्रसन्न हुए परन्तु मथुरा की विक्षिप्त दशा को देखकर व्याकुल हो गये। तभी उन्होंने जिनमन्दिर में जाकर जिनेन्द्रदेव की पूजन कर वहाँ विद्यमान दो मुनिवरों के चरणों में नमस्कार किया तथा नगर की अशान्ति को शान्त करने का उपाय पूछा। चारण ऋद्धिधारी मुनिराज ने उत्तर दिया कि भगवान् श्री शान्तिनाथ के विधान से सर्वत्र शान्ति हो जाएगी और सभी उपद्रव नष्ट हो जाएंगे। सेठ सुमति ने प्रजाजनों के साथ वैसा ही किया जिससे सभी उपद्रव शान्त हो गये। तभी से यह विधान आधि-व्याधि को शान्त करने के लिए किया जाने लगा। यहाँ यह भी स्पष्ट किया गया है कि यह विधान 16 दिन वाले शुक्ल पक्ष में 16 दिन तक करना चाहिए।

विधान प्रारम्भ करने से पूर्व तन-मन की एकाग्रता के लिए निर्धारित मंत्र का जाप करके श्रद्धा व भक्ति पूर्वक भगवान् शान्तिनाथ की स्तुति प्रस्तुत की गई है। इस विधान का मूलमंत्र 'ह्रीं' बीजाक्षर है। यह मंत्र 24 तीर्थंकरों का वाचक व कल्याणकारक है। विधान के प्रारम्भ में भगवान् शान्तिनाथ का अष्ट द्रव्यों से विधिवत् पूजन किया गया है। तदनन्तर प्रत्येक वलय की क्रमशः पूजन है -

1. **प्रथम वलय में**- भगवान् श्री शान्तिनाथ का पूजन उनके अनुपम, दिव्य बाह्य विभूति वाले अष्ट प्रातिहार्यों के साथ किया किया

गया है। यहाँ पर ये अष्ट प्रातिहार्य (अशोकवृक्ष, पुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, दुन्दुभि, छत्रत्रय) आठ बीजाक्षरों (हं, भं, मं, रं, घं, झं, सं, खं) से अभिहित है। इन बीजाक्षरों का प्रमुख रूप से अर्थ इस प्रकार है-

1. हं-शान्तिप्रदायक एवं पुष्टिकारक 2. भं-भरणपोषक 3. मं-सिद्धिदायक 4. रं-अग्निबीज, शक्तिवर्धक 5. घं-विघ्नविनाशक 6. झं-आधि-व्याधि-हारक 7. सं-आत्मविशुद्धि-प्रदायक 8. खं-आकाश या उर्ध्वगति सूचक। इस प्रकार इस वलय में आठ अर्घ्य चढ़ाए जाते हैं जो एक ओर भगवान् की आठ विभूतियों का स्मरण कराते हैं तो दूसरी ओर बीजमंत्रों द्वारा परमात्मोपलब्धि का मार्ग उन्मीलित करते हैं।

2. **द्वितीय वलय में**- इस वलय में सोलह मंत्र हैं। पञ्चपरमेष्ठी तथा रत्नत्रय के आठ अर्घ्यों के पश्चात् अष्टकर्मों के उपद्रवों के विनाश के लिए आठ अर्घ्य समर्पित किए गये हैं। इनका प्रयोजन है कि भव्य जीव अपने नरभव में पञ्चपरमेष्ठियों के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए सम्यक्-दर्शन- ज्ञान-चारित्र को प्राप्त करें तथा अष्टकर्मों का विनाश करें। साथ ही यह कामना की गई है कि भगवान् श्री शान्तिनाथ इन अष्टकर्मों के विपाक से उत्पन्न उपद्रवों के विनाशक हैं।

3. **तृतीय वलय में**- चारों निकाय के बत्तीस देवाधिपति (भवनवासी-10, व्यंतर-8, ज्योतिषी-2 तथा वैमानिक-12) सपरिवार (अर्थात् इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश आदि-आदि देवों के जो दस-दस भेद हैं उन्हें ही देवपरिवार कहना चाहिए क्योंकि देवपरिवार में उनके पुत्र-पुत्रियाँ आदि परिवार तो होता नहीं है) भगवान् श्री शान्तिनाथ के चरणों की अर्चना कर रहे हैं। वे जानते हैं कि पूजा करने से सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है तथा सातिशय पुण्य का बंध होता है। यद्यपि देवलोक में सभी सुख-साधन, भोगोपभोग

की सामग्री व नवयौवन आदि अनायास सहज ही उपलब्ध हैं परन्तु वे इससे संतुष्ट नहीं हैं। वे तो भगवान् श्री शान्तिनाथ से परम शान्ति का वरदान चाहते हैं जो उनके समस्त परिवार को प्राप्त होवे।

4. **चतुर्थ वलय में**- 64 अर्घ्य भगवान् श्री शान्तिनाथ के चरणों में समर्पित किए गये हैं। प्रारम्भ के 32 अर्घ्य जगत् के समस्त उपद्रवों देहिक, दैविक, भौतिक संकटों व पीड़ाओं के विनाश की भावना से चढ़ाएं गये हैं। अन्तिम 32 अर्घ्यों द्वारा भगवान् श्री शान्तिनाथ के गुणों का स्तवन करते हुए यह भावना की गई है कि यह पूजन हमारे जीवन की समस्त विपदाएं दूर करने में निमित्त बनें।

इस प्रकार इस विधान के चार वलयों में क्रमशः 8+16+32+64 = 120 मंत्रात्मक अर्घ्य चढ़ाएं गये हैं। भगवान् श्री शान्तिनाथ से प्रार्थना की गई है कि वे विश्व में संभावनीय आपदाओं का निवारण करके सौख्यप्रद परम शान्ति प्रदान करें। प्रस्तुत विधान के प्रारम्भ में ही यह कथन है-

दूर होते दुःख दारुण, नाथ की शुभ भक्ति से।
ज्यों घन तिमिर है दूर होता, रवि किरण की शक्ति से॥

मौलिक विधान प्रणेता का कथन है-

शान्तिनाथ -महापूजा, विघ्नपीड़ादिनाशिका।
कल्याणप्रद- मांगल्य-दायिका नैव संशयः॥

यह श्री शान्तिनाथ भगवान् की महापूजा (विधान) सभी विघ्नों व कष्टों का नाश करने वाली है तथा कल्याणकारी शुभ-मांगलिकों को प्रदान करती है-इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

प्रो. श्रीचन्द्र जैन
पूर्व प्रधानाचार्य, के. एल, पी. कालेज, रेवाड़ी

श्री शान्तिनाथ विधान

मंगलाचरण (शम्भु छंद)

अरिहन्त जिनेश्वर की अनुपम छवि, शान्ति सुधा धर के उर में।
शिवनाथ निरंजन कर्मजयी बन, जाय बसे प्रभु शिवपुर में।।१।।

मुनिनाथ तपोनिधि सूरि सुधी, तपलीन रहें नित ही वन में।
श्रुत-ज्ञान-सुधा बरसावत है गुरु पाठकवृन्द सुभव्यन में।।२।।

रत्नत्रय की चिर ज्योति जगे, तप-ज्वाला कर्म विनाश करें।
भव-भोग शरीर विरक्त सदा, इन्द्रिय सुख की नहिं आश करें।।३।।

गन्धकुटी में विराजित प्रभु हैं, दिव्यध्वनि उनकी जो खिरी।
गणराज ने गूँथ के ज्ञान-प्रसून, की द्वादश अंग की माल वरी।।४।।

मंगलमय लोक जिनोत्तम हैं, मंगलमय सिद्ध सनातन हैं।
मंगलमय सूरि सुवृत धनी, मंगलमय पाठक के गन हैं।।५।।

(दोहा)

मंगलमय हैं साधु जन, ज्ञान सुधा रस लीन।
जिन प्रणीत वर धर्म है, मंगलमय स्वाधीन।।६।।

सब द्वीपों के मध्य में, जम्बूद्वीप अनूप।
लवण नीर-निधि सर्वतः, जहाँ खातिका-रूप।।७।।

पीछे धातकि-द्वीप है, द्वितीय द्वीप श्रुति सार।
कालोदधि चहुँ ओर है, परिखा के उनहार।।८।।

पुष्कर नामक द्वीप है, कालोदधि के पार।
ताको आधौ भाग ले, ढाईद्वीप सम्हार।।९।।

ढाईद्वीप में तीन काल के, असंख्यात जिनराज।
वन्दनीय जो तीन लोक में, वंदूँ धर्म जहाज।।१०।।

(शम्भु छंद)

चन्द्रकला सम ज्योति मनोहर, अंग जिनेश की राजत हैं।
पद्म पुनीत-प्रभा-सम उज्जवल, देह प्रभु की विराजत हैं।।

कण्ठ-मयूर सुकंचन नीरद, तुल्य जिनेन्द्र की अंग प्रभा।
तीर्थेश्वर चौबीस अलौकिक-रूप-विमुग्ध है देव सभा।।११।।

(दोहा)

भूत भविष्यत वर्तमान के, चौबीसों जिनराज।
रत्नत्रय से भूषित जग में, अनुपम रहे विराज।।१२।।

(गीता छंद)

अरिहन्त सिद्ध त्रिलोक पूजित, धर्मध्वज आचार्य को।
मुनिवृन्द के शिक्षा प्रदायक, पूज्य पाठक आर्य को।
उन साधुओं को जो निरन्तर, ज्ञान-ध्यान-प्रवीण हैं।
तप शान्ति की शुचि साधना में, जो सदा तल्लीन हैं।।१३।।

करके प्रणाम त्रियोग से मैं, शान्तिनाथ विधान को।
प्रारंभ करता हूँ बढ़ाने, भक्ति-श्रद्धा-ज्ञान को।
लोक के सब गणधरों को, भक्ति श्रद्धा भाव से।
कुन्दकुन्दादिक दिगम्बर, मुनिवरों को चाव से।।१४।।

करता प्रणाम विनय सहित मैं, धर्म की हो नित विजय।
निर्विघ्न हो यह पाठ पूरा, है यही मेरी विनय।।१५।।

(दोहा)

शान्तिनाथ भगवान के, गुण हैं अपरम्पार।
वाचस्पति वर्णन करें, तो भी पायें न पार।।१६।।

शान्तिनाथ विधान का फल

(गीता छंद)

यह शान्तिनाथ विधान किसने, कब कहाँ क्यों कर किया।
फल प्राप्ति जो उसको हुई, नरभव सफल उसने किया।
वृत्तान्त उसका मैं प्रसंग सहित यहाँ वर्णन करूँ।
कल्याण हो सुनकर जगत का, ध्यान यह मन में धरूँ।।१।।

(शम्भु छंद)

भरत-क्षेत्र के आर्य-खण्ड में, भारत भू विख्यात सुदेश।
मथुरा नगर वहाँ का शासक, सूर्यवंश का तिलक नरेश।।२।।
राजनीति में निपुण न्यायप्रिय, वीर प्रजा का पालक भूप।
साम-दाम के दण्ड भेद से, शासन-संचालक अनुरूप।।३।।
एक बार जब दैवयोग से, दुर्विपाक ने किया प्रकोप।
ग्राम देवता ने क्रोधित हो, किया उपद्रव शान्त विलोप।।४।।
महाभयंकर व्याधि विषम, अति फैलाई किन्नर ने।
दिन-प्रतिदिन अति प्रबल वेग से, लोग लगे तब मरने।।५।।
रोग प्रपीड़ित जनता नृप ने, छोड़ी मथुरा नगरी।
काल कृपाण लिए लख भारी, जनता भागी सगरी।।६।।
शुक्ल त्रयोदशी के दिन सहसा, सेठ सुमति तहं आए।
मेघ सुवर्षा देख मनोरथ, मन में अति हर्षाए।।७।।
मथुरा नगरी में प्रवेश कर, देखे नहिं नर-नारी।
सूनी नगरी देख सुमति तब, मन में व्याकुल भारी।।८।।
देख जिनालय, पूज जिनेश्वर, मुनि नायक युग वन्दे।
दर्शन वन्दन भक्ति विनय युत, कर उर अति आनन्दे।।९।।

प्रश्न किया तब सेठ सुमति ने, नाथ उपाय बताएं।
होगी शान्ति मुनीश्वर कैसे? व्याधि विघन नश जाएं।।१०।।

चारण ऋद्धि के धारी मुनिश्वर, बोले वचन सुख दाई।
शान्तिनाथ जिन शान्ति विधायक, पूज रचो हर्षाई।।११।।

मंत्रोच्चार

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शान्तिनाथाय सकल विघ्नहराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा मम/अमुकस्य सर्वोपद्रवशान्तिं लक्ष्मीलाभं च कुरु कुरु नमः (स्वाहा)।

विधान के जाप मंत्र का फल

(शम्भु छंद)

इस मन्त्र राज के जपने से, मन शान्त शुद्ध हो जाता है।
विघ्न सभी होते विनष्ट हैं, पुण्य कोष भर जाता है।।१२।।

धन सम्पति अधिकार का मिलना, यह तो है साधारण बात।
उर मन्दिर में ज्ञान सूर्य का, होता उज्ज्वल दिव्य प्रभात।।१३।।

विधान का समय

इसका विधि विधान हे भव्यों, सुनो शुद्ध मन से धर ध्यान।
सोलह दिवसी शुक्लपक्ष में, प्रथम दिवस से करो विधान।।१४।।

जिन पूजा के पूर्व यन्त्र का, संस्थापन पूजन शुभ कार्य।
सहस मन्त्र का जाप करो नित, षोडस दिन तक सुमति सुआर्य।।१५।।

पूजा के महा विधान में, दीप धूप फल पुष्प सुगन्ध।
भक्ति-भाव युत करो समर्पित, अशुभ कर्म हो जिससे मंद।।१६।।

श्री शान्तिनाथ स्तवन

(गीता छंद)

संसार सागर में भटकते, प्राणियों को हे प्रभो!
आपके युग चरण ही तो, शरण दे सकते विभो।।
दावाग्नि दुख-सन्ताप की, सर्वत्र ही तो जल रही।
मद-मोह-माया ही निजातम, को निरन्तर छल रही।।१।।

क्रोधित भुजंगम के डसे, बहु प्राणियों के गात्र में।
गारुड़ी-विद्या प्रशम करती है, यथा क्षण मात्र में।।
प्रभु आपके चरणाम्बुजों का, ध्यान करते भक्ति से।
सब विघ्न बाधाएँ विलय, होतीं निजातम शक्ति से।।२।।

तप्त स्वर्ण के तुल्य आपके, दिव्यचरण का निर्मल ध्यान।
भव-सागर में पड़े प्राणियों, के तारण हित बनता यान।।
ज्यों यामिनी के घन - तिमिर में, लुप्त भू - आलोक हो।
उद्यद् दिवाकर रश्मियाँ, करतीं प्रकाशित लोक को।।३।।

जब तक नहीं होता उदय, रवि रश्मि का संसार में।
जब तक कमलश्री सुप्त रहती, है सतत कासार[१] में।।
जब तक नहीं होती कृपा, भगवान के युगचरण की।
तब तक नहीं यह टूटती, जंजीर जीवन - मरण की।।४।।

लोकालोक विलोकन में, परिपूर्ण समर्थ जिनेंद्र प्रभो।
त्रयछत्र छटा रवि तुल्य अनूप विराजित ज्ञान के पुंज प्रभो।।
पदपद्म के गुणगान पुनीत से, पाप पलायन हो क्षण में।
दर्पान्ध मृगेन्द्र के भीम निनाद से वन्य गजेन्द्र भगें रण में।।५।।

प्रत्यूष बेला के ललित उज्जवल, दिवाकर सा विमल।
नाथ का भामण्डलं ज्यों, सोहता स्वर्णिम कमल।।
दिव्यांगनाओं के नयन मन, कर प्रफुल्लित मोहता।
त्रैलोक्य के तम - तोम को, करता विदूरित सोहता।।६।।

---

[१] बावड़ी/सरोवर

बाधा रहित शाश्वत निराकुल, अन्यतम सुख सम्पदा।
नाथ के चरणारविन्दों, के समागम से सदा।।
प्राप्त करते भक्त जन हैं, भक्ति के आधार से।
आश्चर्य क्या यदि पार हों, संसार - पारावार से।।७।।

हे शान्तिनाथ जिनेन्द्र तेरे, भक्त नित पाते कृपा।
भव दु:ख से संतप्त जन के, हेतु बन जाती प्रपा।।
दूर होते दु:ख - दारुण, नाथ की शुभ भक्ति से।
ज्यों घन तिमिर है दूर होता, रवि किरण की शक्ति से।।८।।

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र के, इस संस्तवन को भाव से।
जो भव्य जन पढ़ते निरन्तर, हैं विनय से चाव से।।
परिणाम उनके हों विमल, सब विघ्न बाधाएँ टलें।
कल्याण मन्दिर के पथिक वे, मुक्ति के पथ पर चलें।।९।।

मंडल पर पुष्पांजली क्षेपण।

□ □ □

विधान प्रारम्भ

स्थापना

हे शान्ति प्रभो! हे शान्ति प्रभो! मेरे मन-मन्दिर में आओ।
अघवर्ग विनाशन-हेतु प्रभो, निज शान्त दिव्य छवि दर्शाओ।।१।।

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम निरन्तर जपने से।
भव-भोग-शरीर विनश्वर तब, क्षण भंगुर लगते सपने से।।२।।

नर जन्म सफल हो जाता है, जब ध्यान हृदय में आता है।
आतम स्वरूप में लीन हुआ, भव-सागर से तर जाता है।।३।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त! सकलविघ्नशान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर! द्वादशमकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त। षोडशमतीर्थंकर! श्रीशान्तिनाथभगवन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

स्वर्ण कलश में जल ले जो, नित जिन पद पूजन करते हैं।
निश्चय ही वे राजतिलक की, अनमोल सम्पदा वरते हैं।।१।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद् विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय जलं नि. स्वाहा।

केसर कर्पूर चन्दन द्वारा, जिनवर के चरणों का अर्चन।
जो करते हैं स्वर्गों तक में, सुरभित होते हैं उनके तन।।२।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय चन्दनं नि. स्वाहा।

प्रभु के चरण कमल की पूजा, निर्मल अक्षत से करते।
कामदेव सा पा शरीर, वे दीर्घ आयु जीवन धरते।।३।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीनाशान्तिनाथाय अक्षतान् नि. स्वाहा।

जो कुन्द चमेली के द्वारा, करते प्रभु पद पंकज-पूजन।
वे पुष्पोत्तर विमान द्वारा, सम्पूर्ण सफल करते जीवन।।४।।

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्-विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय पुष्पं नि. स्वाहा।

उज्ज्वल स्वर्ण पात्र में लेकर, आज्य पक्व नैवेद्य विमल।
अर्पित करते प्रभु चरणों में, पा जाते कल्प वृक्ष के फल।।५।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

उज्ज्वल कर्पूर दीप द्वारा, जिनवर की सौम्य आरती से।
उद्भासित केवल जोति जगे, उसमें सन्दीप्त भारती से।।६।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय दीपं नि. स्वाहा।

चन्दन कर्पूर धूप द्वारा, जिनवर की शुभ्र अर्चना से।
पाऊँ निरोगतन कान्तिमयी, प्रभु की निशि याम वन्दना से।।७।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय धूपं नि. स्वाहा।

श्रीफल कदली इत्यादिक से, श्री जिनके चरणों का पूजन।
वे मनवांछित फल पाते हैं, पूजन जो करते हैं भवि जन।।८।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय फलं नि. स्वाहा।

अष्टद्रव्यमय अर्घ्य विमल ले, शान्तिनाथ प्रभु का पूजन।
करते हैं जो भव्य शतेन्द्रों, से वन्दित हों दिव्य चरण।।९।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(पद्धरि)

ज्ञानरूप ओंकार नमस्ते, ह्रीं मध्ये प्रभु शान्ति नमस्ते।
स्नातकऋषि अरिहन्त नमस्ते, दया धर्म-परिपूर्ण नमस्ते।।१।।
एकानेक-स्वरूप नमस्ते, श्रीमच्चक्राधीश नमस्ते।
शान्ति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, ज्ञान गर्भ निज रूप नमस्ते नमस्ते।।२।।
नाना भाषा बोध नमस्ते, आशा-पाश विहीन नमस्ते।
पावन-गुण-गण गीत नमस्ते, अष्टकर्म-विध्वंस नमस्ते।।३।।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, पर संकल्प-विहीन नमस्ते।
मुक्ति वधू के कन्त नमस्ते, सम्यक् चारित दक्ष नमस्ते।।४।।
आत्म स्वभावे लीन नमस्ते, रत्नत्रय- संयुक्त नमस्ते।
आत्म बोध परिपूर्ण नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।।५।।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, वाणी विश्व हिताय नमस्ते।
शान्तिनाथ परमेश नमस्ते, तीव्र गरल-हर दक्ष नमस्ते।।६।।
कुरुवंशे [१]अवतंस नमस्ते, ऋषि चित हर्षित करण नमस्ते।
कुल क्रमभृते जिनेन्द्र नमस्ते, सदा विचित्र स्वरूप नमस्ते।।७।।
[२]ह्रीं बीजे वरशायि नमस्ते, धीर वीर भुवनेन्द्र नमस्ते।
विघ्नविनाशक शान्ति नमस्ते, प्राणि नाथ तव नाम नमस्ते।।८।।
भय हर्ता निर्भीक नमस्ते, दिव्य धुनी शिव रूप नमस्ते।
धर्म धुरंधर धीर नमस्ते, निज चैतन्ये लीन नमस्ते।।९।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

घत्ता

शान्ति जिनाष्टक को जो भविजन, धारे नित्य हृदय में।
सुख सम्पति ऐश्वर्य प्राप्त हो, संशय नहीं विजय में।।१०।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

□ □ □

---

[१] इन्द्र (शिरोमणि/आभूषण), [२] ह्रीं बीज में रहने वाले

प्रथम वलय पूजा

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय नमः प्रथम वलयस्याष्ट कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
हं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।१।।

ॐ ह्रीं अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमण्डिताय अशोकतरुसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
भं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।२।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय भूम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
मं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।३।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
रं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।४।।

ॐ ह्रीं चामरोत्तोलनसत्प्रातिहार्यमण्डिताय चामरोत्तोलनसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
घं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।५।।

ॐ ह्रीं सिंहासनसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सिंहासनसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
झं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।६।।

ॐ ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्यमण्डिताय भामण्डलसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
सं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।७।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।
खं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन।।८।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमण्डिताय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्ययुक्तशोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ह भ म र घ झ स ख बीजयुत, वर्णन कर भरपूर।
स्तोत्र अर्घ्य से पूजते, विघ्न वर्ग हों दूर।।९।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्यसहिताय अष्टबीजमण्डनमण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

□ □ □

द्वितीय वलय पूजा

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय नमः द्वितीय वलयस्यषोडश कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भक्ति भाव युत प्रभु पूजन को, इन्द्र जिनालय आवें।
तीर्थंकर पदवी के कारण, श्री जिनके गुण गावें।।
श्री जिन प्रभु के पद पंकज की, पूजा इन्द्र रचावें।
दर्शन ज्ञान अनन्त सुखामृत, बल विक्रम वे पावें।।१।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्य - खण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान सर्वार्हत्परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्यु-पेता-मलतर-खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्ट कर्म से मुक्त निरंजन, सिद्ध स्वरूपी राजे।
क्षायिक सम्यक् आदि गुणोत्तम, सीमातीत विराजें।।

भूत भविष्यत् वर्तमान के, सिद्ध अनन्त निरन्जन।
निज स्वरूप में लीन प्रभु का, करता पूजन वंदन।।२।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्य - खण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान सर्वसिद्ध परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्यु-पेता-मलतर-खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पञ्चाचार - विभूषित गुरुवर, आतम-ज्योति जगावें।
ज्ञानतपोनिधि कर्म दलन को, ध्यान-कुठार उठावें।।
शान्ति सुधाकर की शुचि शीतल, रश्मि-प्रकाश प्रसारें।
संघ चतुर्विध के अधिनायक, काम-महारिपु मारें।।३।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्य - खण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान सर्वाचार्य-परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्युपेता-मलतर-खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वादश अंग विभूषित मुनिवर, पाठक साधु सुधी के।
मान विमर्दन करते निर्मद, आत्म सुधारस पी के।।
ध्याना-ध्ययन निरन्तर जिनके, शिव-साधन दर्शावें।
इष्टा-निष्ट संयोग वियोगे, हर्ष-विषाद नशावें।।४।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्य - खण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान-सर्वपाठक-परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्युपेता-मलतर-खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप लीन निरन्तर, समता-स्वादक योगी।
विषयातीत-स्वरूप जितेन्द्रिय, आत्म स्वरस के भोगी।।
ध्यान कृपाण लिए मुनि योगी, कर्म-महारिपु मारें।
गुणश्रेणी युत करें निर्जरा, निजगुण रूप विचारें।।५।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्य - खण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान-सर्वसाधु-परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्युपेता-मलतर-खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पच्चीस दोषों से रहित, अष्टाङ्ग सम्यग् दर्शनम्।
अर्हन्त आगम गुरुवरों का, मैं करूं नित अर्चनम्।।६।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्वा-मलतर- खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वादशाङ्ग जिनेन्द्र-वाणी, ज्ञान - दोष - विवर्जितम्।
सम्यग्विभूषित आत्मज्योति, प्रकाश को शत वन्दनम्।।७।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यग्ज्ञाना-मलतर-खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुप्तियाँ त्रय समिति पाँचों, और पञ्च महाव्रतम्।
तेरह प्रकार चरित्र सम्यक्, का करूं मैं पूजनम्।।८।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्-चारित्रा-मलतर-खण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञानावरणी पञ्च प्रकृतियाँ, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।।९।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दर्शनावरणी कर्म प्रकृति नव, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।।१०।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वेदनीय विधि सुखदुख दायक, प्रभु ने उभय विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।।११।।

ॐ ह्रीं वेदनीय-कर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्टा-विंशति प्रकृति मोह की, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।।१२।।

ॐ ह्रीं प्रचण्डमोहनीय-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्म-विपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आयु कर्म की प्रकृति चार हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी॥१३॥

ॐ ह्रीं आयु-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम कर्म की प्रकृति नवति त्रय, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी॥१४॥

ॐ ह्रीं नाम-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गोत्रकर्म की प्रकृति शुभाशुभ, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी॥१५॥

ॐ ह्रीं गोत्र-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अन्तराय विधि पञ्च प्रकृतियाँ, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी॥१६॥

ॐ ह्रीं अंतराय-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरण से भूषित, पञ्च परम पद पाऊँ।
शान्तिनाथ जिन के चरणों में, नित प्रति अर्घ चढ़ाऊँ॥१७॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठि-पदप्रदायकाय दर्शन-ज्ञान-चारित्र-कारकाय अष्टकर्म-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

□ □ □

तृतीय वलय पूजा

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय नमः तृतीय वलयस्य द्वात्रिंशत् कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

निज-परिवार सहित असुरों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।१।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित नागों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।२।।

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित विद्युत के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।३।।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित सुपर्ण के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।४।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित पावक के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।५।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित मारुत के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।६।।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित मेघों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥७॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित सागर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥८॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित द्वीपों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥९॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित दिक्सुर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥१०॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज-परिवार सहित किन्नर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥११॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

किम्पुरुषों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥१२॥

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महोरगों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥१३॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंधर्वों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।१४।।

ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

यक्षसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।१५।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

राक्षसगण के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।१६।।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूतसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।१७।।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुरपिशाच के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।१८।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्योतिषियों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।१९।।

ॐ ह्रीं चन्द्रनामकेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्योतिषिदेव प्रतीन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।२०।।

ॐ ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इंद्रामर सौधर्म स्वर्ग के, भक्त जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२१॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इंद्रामर ईशान स्वर्ग के, भक्त जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२२॥

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सनत स्वर्ग के इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२३॥

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इंद्रामर माहेन्द्र स्वर्ग के, भक्त जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२४॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ब्रह्मस्वर्ग के इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२५॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लान्तव के सुर इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२६॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुक्र स्वर्ग के इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२७॥

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शतारेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२८॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आनतेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥२९॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणतेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥३०॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आरणेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥३१॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अच्युतेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें॥३२॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बत्तीस इन्द्रों से प्रपूजित, शान्तिनाथ जिनेश को।
परिपूर्ण अर्घ चढ़ाय पाऊँ, हे प्रभो! शिवलोक को॥३३॥

ॐ ह्रीं चतुर्णिकायदेवेन्द्रपूजिताय श्रीशान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

□ □ □

चतुर्थ वलय पूजा

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय नमः चतुर्थ वलयस्य चतुःषष्ठि कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

वसंततिलका छंद

मन के विकार सब नाशन हेतु तेरी।
पूजा प्रशांत करती लगती न देरी॥
हे शान्तिनाथ भगवन्! भवतापहारी।
सादर प्रणाम तुमको अघ नाशकारी॥१॥

ॐ ह्रीं मानसिकविकारोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वाणी प्रयत्नकृत दोष निवारने को।
पूजा समर्थ भविजन्म सुधारने को॥
हे शान्तिनाथ भगवन्! भवतापहारी।
सादर प्रणाम तुमको अघ नाशकारी॥२॥

ॐ ह्रीं वाचनिकविकारोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

काया कुठार कृत पाप प्रणाशकारी।
अर्चन सशक्त सर्वत्र प्रदोषहारी॥
हे शान्तिनाथ भगवन्! भवतापहारी।
सादर प्रणाम तुमको अघ नाशकारी॥३॥

ॐ ह्रीं कायिक-पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(शम्भु छंद)

राज्यश्री, पुर, गेह, नाश सों, होय उपद्रव भारी।
उनके नाशन हेतु प्रभु की, पूजा मंगलकारी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥४॥

ॐ ह्रीं राज्य-लक्ष्मी-पुर-गेह-पदभ्रष्टोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्वोपार्जित कर्म उदय सों, घोर विपत्ति सतावे।
लक्ष्मी हीन दरिद्री नर नित, तीव्र महा दुख पावे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥५॥

ॐ ह्रीं दारिद्रोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भीम भगन्दर कुष्ट जलोदर, आदिक रोग घनेरे।
व्याधि उपद्रव कर्म विनाशन, हेतु जजों पद तेरे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥६॥

ॐ ह्रीं भीम-भगन्दर-गलितकुष्ठ-गुल्म-जलोदर-रक्त-पित्त-कफ-वात-स्फोट-काद्युपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग से, जीव महा दुख पावे।
निज परिणति को भूले मोही, आर्त रौद्र उपजावे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥७॥

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज सेना वा पर सेना कृत, घोर उपद्रव आवें।
धर्माराधन ध्यान विमुख तब, प्राणि महा दुख पावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥८॥

ॐ ह्रीं स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाना आयुध देह विनाशक, घोर उपद्रव आवें।
आर्त रौद्र की परिणति व्यापै, कोई नहीं बचावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥९॥

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जलचर प्राणी दुष्ट नक्र औ, मत्स्य महा भयकारी।
कर्म उदय जल बीच सतावें, व्याकुल हों नरनारी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१०॥

ॐ ह्रीं दुष्टजलचरजीवोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वन पर्वत के मध्य चतुष्पद, सिंह गजादिक प्रानी।
आक्रामक बन नित्य सतावें, करें दुष्ट मनमानी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥११॥

ॐ ह्रीं व्याघ्र-सिंह-गजादिक-वन-पर्वत-वासि-श्वापदाद्युपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूचर खेचर क्रूर जीव कृत, तीव्र उपद्रव आवें।
आशापाश बंधा यह प्राणी, परपरणति लिपटावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१२॥

ॐ ह्रीं भूचर-गगनचर-जीवोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भीम भुजंगम वृश्चिक भीषण, घोर विषैले प्राणी।
हलाहल विषदंत [1]वदन से, पीड़ित हों जग प्राणी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१३॥

ॐ ह्रीं व्याल-वृश्चिकादि-विष-दुर्द्धरोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नख शृंगादिक तीक्ष्ण विषैले, जीवों के दु:खकारी।
कर्म असाता प्रेरित प्राणी, भुगते दुख अति भारी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१४॥

ॐ ह्रीं दुष्टजीव-पद-कर-नखोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

---

[1] मुँह

वन पशुओं के दाढ़ सींग नख, अति विकरालघनेरे।
चंतु तुंड दंतादिक कृत दुख, घोर असाता घेरे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१५॥

ॐ ह्रीं चञ्चु-तुण्ड-दाढ-कण्टकोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दावानल वन मध्य भयंकर, खग मृग वृक्ष जलावें।
जीव असाता कर्मोदय से, घोर महा दुख पावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१६॥

ॐ ह्रीं दावानलोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

घोर प्रचंड पवन का दुर्जय, वेग भयंकर धावे।
सागर मध्य प्रचंड लहर की, भीम भँवर लहरावे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१७॥

ॐ ह्रीं प्रचण्ड-पवनोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नौका पोत स्फोट उदधि में, दारुण दुःख प्रदाता।
सागर मध्य पतन जब होवे, कर्म विपाक असाता॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१८॥

ॐ ह्रीं नौका-स्फोट-पतनोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वन पर्वत भूमंडल मध्ये, उदित उपद्रव भारी।
प्रभु पूजा से दूर सभी हों, फल हो मंगलकारी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥१९॥

ॐ ह्रीं वन-नग-मेदिनी-भयंकरोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सरिता सागर कूप सरोवर, झील जलाशय वापी।
इनके उपसर्गों से रक्षण, पाता पीड़ित प्राणी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२०॥

ॐ ह्रीं नदी-सरोवराब्धि-कूप-ह्रदोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

विद्युत्पात भयंकर वर्षा, ओला पाला पानी।
दैव विपाक अनेक उपद्रव, पीड़ा की मनमानी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२१॥

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादि-भीमाम्बु-वृष्ट्युपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

युद्धस्थल के मध्य शत्रु दल, शस्त्र अनेक चलावें।
कर्म असात अकाल मरण दुख, सब ही प्राणी पावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२२॥

ॐ ह्रीं संग्राम-स्थलारि-निकटोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

डाकिनि शाकिनि भूत प्रेत अरु, घोर पिशाच घनेरे।
कर्मों के परिपाक विषम सों, रहते निशदिन घेरे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२३॥

ॐ ह्रीं डाकिनी-शाकिनी-भूत-पिशाचादिभय-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उच्चाटन सम्मोहन थम्भन, घोर उपद्रव आवें।
विद्या दुष्ट विविध रूपों में, आकर नित्य सतावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२४॥

ॐ ह्रीं मोहन-स्तम्भनोच्चाटन-प्रमुख-दुष्टविद्योपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दुष्ट नवग्रह कृत पीड़ाएँ, कर्म उदय से आवें।
अज्ञानी मिथ्यात्वी मूरख, कुगुरु कुदेव मनावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२५॥

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लोह शृंखला के दृढ़ बंधन, अंग उपांग दुखावें।
पीड़ित प्राणी महा दुख पावे, हाहाकार मचावें॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२६॥

ॐ ह्रीं शृंखलाद्युपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अल्प आयु कृत कर्म योग से, जन्म मरण दुख भारी।
मन में व्याप्त प्रचंड विकलता, दुखिया सब संसारी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२७॥

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्म उदय दुर्भिक्ष उपद्रव, अन्नाभाव सतावे।
जठरानल की भीषण ज्वाला, प्राणी को बिलखावे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२८॥

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंतराय यह लाभ विरोधी, कर्म उदय जब आवें।
व्यापारादिक वृद्धि न होवे, धन सम्पत्ति नशावे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥२९॥

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धि-रहित्योपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

संबंधी परिवार भ्रात सुत, बने अकारण बैरी।
घोर उपद्रव करें निरंतर, व्यापे विपद घनेरी॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥३०॥

ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अकुटुम्बी संतान बिना नित, अति संक्लेशित होवे।
मिथ्या मोह उदय से प्रेरित, प्राणी रोवे धोवे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥३१॥

ॐ ह्रीं अकुटुम्बत्वोपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाप उदय अपकीर्ति दुखद हो, आकुलता उपजावे।
मनसंताप महा दुख ज्वाला, सब सुखशान्ति जलावे॥
शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें॥३२॥

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रव-निवारकाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(गीता छन्द)

विश्व के कल्याण की, मंगल मयी शुभ कामना।
ज्ञान दर्शन चरित तप हो, मोक्ष की प्रस्तावना॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥३३॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याण-मंगलप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चिंतामणि के तुल्य लाभप्रद, शान्ति प्रभु को ध्यावें।
करें अर्चना नित्य चाव से, अतिशय शुभ फल पावें॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥३४॥

ॐ ह्रीं चिन्तामणिसमान-चिन्तित-फलप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कल्पद्रुम सम फलप्रदाता ताप पाप विनाशिनी।
आराधना श्री शान्तिजिन की सतत मंगलकारिणी॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥३५॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपम-कल्पितार्थ-फलप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कामधेनु तुल्य अनुपम, सब मनोरथ पूरिणी।
आनंददायक अर्चना प्रभु की, सदा हितकारिणी॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥३६॥

ॐ ह्रीं कामधेनूपम-कामनापूर्ण-फलप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परम उज्ज्वल धर्म ध्यानाराधना की कारिणी।
बाधा रहित प्रभु अर्चना आनन्द मंगलदायिनी॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥३७॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-धर्मध्यान-बाधारहिताय अबुधबोधप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

त्रैलोक्य के सब प्राणियों को, नेत्र का उत्सव करें।
मनसिज सदृश सौन्दर्य पावें, जो प्रभु पूजा करें॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥३८॥

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूपप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्पूर चंदन अगुरु पंकज, तुल्य सुरभित देह हो।
यदि शान्तिजिन की अर्चना में, अमल निश्चल नेह हो॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥३९॥

ॐ ह्रीं सुगन्धित-शरीरप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, नाथ का भामण्डलम्।
रवि रश्मिवत् करता प्रकाशित शान्तिजिन गुणमंडलम्॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लाद-कारक-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्षीर सागर की समुज्ज्वल, अमल लहरों से धवल।
देवता गाते निरंतर आपके हैं गुण विमल॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४१॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-गुणगण-सहित-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वाचस्पति के तुल्य निर्मल, विशद-प्रतिभादायिनी।
आपकी है अर्चना ज्यों, पूर्णिमा की चाँदनी॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४२॥

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमान-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नवनिधि चतुर्दश रत्न का, स्वामित्व जो चक्रेश को।
खग देव नर द्वारा समर्चित पूजता तीर्थेश को॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४३॥

ॐ ह्रीं चक्रवर्ति-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोनों कुलों की कीर्ति को, निज गुण विभूषित जो करें।
मुक्ति रमा वरती उन्हें जो, शान्तिजिन पूजा करें॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४४॥

ॐ ह्रीं उभयकुल-कमल-विकासन-सुर्यांशु समाचरण-गुणमंडित अत्यन्त सुन्दराकृति-पुत्रवन्तिगेह मण्डन पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्चना शुभभाव से, अरिहंत की जो नित करें।
श्रावकोत्तम व्रतधरन, सद् बुद्धि को वे नर वरें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।४५।।

ॐ ह्रीं श्रावक-सद्वृत्तकरण-बुद्धिप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शारदी नव ज्योत्साना सम, कीर्ति का विस्तार हो।
प्रभु अर्चना ही मात्र इक जो प्राण का आधार हो।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।४६।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-कीर्तिप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कल्याणकर्त्री राज-लक्ष्मी, धनद सम वे नर वरें।
जिनराज की शुभ भावना से, जो सतत पूजा करें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।४७।।

ॐ ह्रीं कल्याणकर-राजधनद-सम-लक्ष्मीप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तिर्यंच नारक भव कभी, जिन भक्त को मिलता नहीं।
नर देव भव शुभ लोक में, पाते प्रभु के भक्त ही।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।४८।।

ॐ ह्रीं नरक-तिर्यंच-गतिरहित-नर-सुर-गतिसहित-भवप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भावना षोडश विमल प्रभु, अर्चना से प्राप्त हों।
तीर्थकर पदवी मिले, जिससे कि निश्चय आप्त हों।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।४९।।

ॐ ह्रीं षोडशकारण-भावना-साधन-बलप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लोक दुर्लभ स्वप्न सोलह, नाथ माता देखती।
एक जननी पद प्रसव, जिन पूज के अवलोकती॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥५०॥

ॐ ह्रीं जिनजननी-तुल्यैकजननी-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थेश वन सुर शैल पर, होता विशद अभिषेक है।
जिनअर्चना का हृदय जिनके, प्रकट विमल विवेक है॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥५१॥

ॐ ह्रीं मेरुशिखरे स्नानयुक्त-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

संसार भोग शरीर से निर्वेद दीक्षा दायकम्
नर जन्म प्रभु की अर्चना से मिले शुभ शिवकारकम्॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥५२॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षि-दीक्षाकारि-भवप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिनचंद्र के निर्मल सुशासन, के असीम प्रभाव से।
वज्रवृषभ नाराच संहनन, प्राप्त पूजन भाव से॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥५३॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच-संहनन-मुक्तिप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नत्रयामृत से विभूषित ध्यान के उपयोग से।
निर्मल तथा विख्यात हो जिन अर्चना के योग से॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥५४॥

ॐ ह्रीं यथाख्यात-रत्नत्रयाचरण-युक्त-बलप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज ध्यान में तल्लीन आतम, स्वाद अमृत चख सके।
तीर्थेश शान्ति जिनेश पूजन, से निजातम लख सके।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।५५।।

ॐ ह्रीं स्वात्म-ध्यानामृत-स्वादसहित-भवप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

राजतीं बारह सभा जिन, समवसरणे सर्वदा।
त्रैलोक्य पति जिनअर्चना से, प्राप्त होती सुख प्रदा।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।५६।।

ॐ ह्रीं समवसरण-विभूति-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिनराज प्रभु की दिव्य ध्वनि, दिनरात में चतुबार हो।
जिसका श्रवण कर भविक को, कैवल्य अपरंपार हो।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।५७।।

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञान-विभूति-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्ट कर्मों से रहित, गुण अष्ट युत परमात्मा।
निर्भय निरंजन सिद्ध पद, पाता सुधी धर्मात्मा।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।५८।।

ॐ ह्रीं निरंजन-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चित्त को आनंद देती, नाथ की दिव्यार्चना।
सम्यक्त्व प्रभु पुजारी की करें, सुर वंदना।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।।५९।।

ॐ ह्रीं चिदानंद-करणसमर्थाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिनके विमल मुखचंद्र से, अमृतवचन अनुपम झरें।
त्रैलोक्य की निधियाँ सकल, प्रभु के पुजारी को वरें॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥६०॥

ॐ ह्रीं वचनानंद-करणसमर्थाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिननाथ के तन की अलौकिक, दिव्य परमाणु की प्रभा।
देखकर होती प्रफुल्लित, देव नर पशु की सभा॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥६१॥

ॐ ह्रीं कायानंद-करण-समर्थाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वार्थ वर्गों का प्रसाधक, नाथ मनसा चिंतनम्।
तीर्थेश की दिव्यार्चना का, है महत् अतिशय फलम्॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥६२॥

ॐ ह्रीं अर्थवर्ग-सिद्धि-साधन-करणसमर्थाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु के गुणों का संस्तवन, निज वाणि-वीणा से करें।
वे काम वर्ग प्रसाधिनी, उत्कृष्ट महिमा को वरें॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥६३॥

ॐ ह्रीं कामवर्ग-सिद्धि-साधन-करणसमर्थाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिननाथ पूजा से सफल, निज देह को जो नर करें।
आश्चर्य क्या यदि मोक्ष लक्ष्मी, को सहज ही वे वरें॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥६४॥

ॐ ह्रीं मोक्षवर्गसाधनसिद्ध-करणसमर्थाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निर्लिप्त श्री जिनराज, चौसठ, ऋद्धियों के नाथ हैं।
शत इन्द्र के झुकते सतत, पद पंकजों में माथ हैं॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥६५॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि-ऋद्धिसमानांगाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शत एक विंशति तीर्थकर, जिनचंद्र की पूजा करूं।
विघ्नौघ के शान्त्यर्थ मैं, पूर्णार्घ्य चरणों में धरूं॥
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥६६॥

ॐ ह्रीं शतैकविंशति-कोष्ठ-स्थापिताय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अरिहंत के अतिरिक्त कोई, है नहीं जग में शरण।
संसार सागर में सुनौका, मात्र हैं प्रभु के चरण॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(जातिपुष्प अथवा लवंग से 108 बार जाप देवें)

जयमाला

शान्तिनाथ भगवान के, गुण हैं अपरंपार।
निराधार संसार में, भक्तों के आधार॥१॥
पंचम श्री चक्रीश है, द्वादशवें रतिनाथ।
षोडशवें तीर्थेश को, सदा नवाऊँ माथ॥२॥

पद्धरि

जय शान्ति प्रभो चिद्रूपराज, जगजलनिधि में अद्भुत जहाज।
जय कर्म विनाशक शान्तिनाथ, जय विघ्न विनाशक शान्तिनाथ।

जय गुणवारिधि हे शान्तिनाथ, जय मुक्तिवधू के प्राणनाथ।
जय आत्म हितंकर शान्तिनाथ, जय काम विनाशक शान्तिनाथ।
जय मोहप्रहारक शान्तिनाथ, जय मंगलकारक शान्तिनाथ।
जय पाप-विनाशक शान्तिनाथ, भुवनत्रय-ज्ञायक शान्तिनाथ।
जय सम्यक् दायक शान्तिनाथ, शिवमार्ग-विधायक शान्तिनाथ।
जय भवगृहभंजन शान्तिनाथ, जय अलख निरंजन शान्तिनाथ।
जय ऐरासुत श्री शान्तिनाथ, त्रिभुवनत्राता हितु शान्तिनाथ।
जय शान्तिनाथ शिव के दायक, जय हित-संदेशक अघहारक।
जय जन्म-जरा-मृतु-संहारक, जय रोग-शोक हर सुखदायक।
शिव सुख के साधन शान्तिनाथ, भव भय के भंजक शान्तिनाथ।
जय मानबली के मद मर्दक, जय शान्तिनाथ गुण-गणवर्धक।
कर्मों के दुख संहारक हो, भय-भूत-पिशाच-निवारक हो।
नवग्रहकृत बाधा दूर करो, व्यालादि विपति चकचूर करो।
जय भव्य सरोज दिवाकर हो, जय शिव सुख पदम प्रभाकर हो।

ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाप पंक में मग्न, विश्व के हैं सब प्राणी।
मल प्रक्षालन हेतु, नाथ की मंगल वाणी।।

प्रभु पद पंकज में जलधारा, अर्पित करते जो प्राणी।
होती निश्चय नित्य विश्व में, शान्तिसुधा वह कल्याणी।।

इत्याशीर्वादः

□ □ □

आरती

जय जिनवर देवा, प्रभु जय जिनवर देवा।
शान्ति विधाता शिवसुख दाता शान्तिनाथ देवा॥

ऐरा देवी धन्य जगत में, जिस उर आन बसें।
विश्वसेन कुल नभ में मानो पूनम चन्द्र बसे॥१॥

कृष्ण चतुर्दशी ज्येष्ठ मास की आनंद करतारी।
हस्तिनापुर में जन्म-महोत्सव ठाठ रचे भारी॥२॥

बाल्यकाल की लीला अद्‌भुत सुर नर मन भाई।
न्याय नीति से राज्य किये, चिर सबको सुखदाई॥३॥

पंचम चक्री काम द्वादशम सोलम तीर्थंकर।
त्रय पद धारी तुम ही मुरारी ब्रह्मा शिवशंकर॥४॥

भव तन भोग समझ क्षणभंगुर, पुनि व्रतधार लिये।
षट् खण्ड नवनिधि रत्न चर्तुदश तृणवत् क्षार दिये॥५॥

दुर्दर तपकर कर्म निवारे केवल ज्ञान लहा।
दे उपदेश भविक जनबोधे ये उपकार महा॥६॥

शांतिनाथ है नाम तिहारा सब जग शांति करो।
अरज करे 'शिवराम' चरण में भव आताप हरो॥७॥

□ □ □

प्रकाशित ग्रंथों की सूची

		लेखक	मूल्य
1.	स्तुति सौरभ	संकलन पू. आ. दृढ़मति माताजी ससंघ	80/-
2.	स्तुति विद्या	आ. समन्तभद्र जी	अप्राप्य
3.	मानवता की धुरी	पं. नीरज जैन (सतना)	अप्राप्य
4.	समणसुत्तं	संकलन श्री जिनेन्द्र वर्णी	200/-
5.	सो बोध कथायें	पं. निहालचन्द जैन	50/-
6.	मानव धर्म (हिन्दी व अंग्रेजी)	आ. ज्ञानसागर जी महाराज	150/-
7.	कर्त्तव्य पथ प्रदर्शन	आ. ज्ञानसागर जी महाराज	25/-
8.	सम्यक्त्वसार शतक अप्राप्य (हिन्दी व्याख्या सहित)	आ. ज्ञानसागर जी महाराज	60/-
9.	बृहत्स्वयम्भूस्तोत्रम्	आ. समन्तभद्रजी	125/-
10.	इष्टोपदेश	आ. पूज्यपाद स्वामी	150/-
11.	प्रवचन प्रतिष्ठा	आ. विद्यासागर जी	40/-
12.	मानव धर्म	आ. ज्ञानसागर जी महाराज	50/-
13.	समग्र (भाग-4)	आ. विद्यासागर जी	150/-
14.	दैनिक अभिषेक पूजन विधि	संकलन मुनि श्री सुधासागर जी	स्वाध्याय
15.	समयोपदेश (भाग-1)	आ. विद्यासागर जी	150/-
16.	समयोपदेश (भाग-2)	आ. विद्यासागर जी	150/-
17.	समयोपदेश (भाग-3)	आ. विद्यासागर जी	150/-
18.	समयोपदेश (भाग-4)	आ. विद्यासागर जी	150/-
19.	कुरल काव्य	तिरूवल्लुवराचार्य कृत (संस्कृत-हिन्दी अनुवाद)	100/-
20.	कुरल काव्य	तिरूवल्लुवराचार्य कृत (हिन्दी अनुवाद)	60/-
21.	जैनत्व के संस्कार		10/-
22.	जैन विरासत	डा. (श्रीमती) ज्योति जैन धर्मपत्नी स्व. डा. कपूर चन्द जैन	40/-
23.	हरिवंश पुराण की शिक्षाप्रद उपकथाएं	प्रो. श्रीचन्द्र जैन, अजित प्रसाद जैन	80/-
24.	हरिवंश पुराण मूलकथासार	प्रो. श्रीचन्द्र जैन, अजित प्रसाद जैन	100/-
25.	आचारसार	आ. वीरनन्दी जी टीका - मुनि सुवंद्यसागर जी	400/-
26.	तीस चौबीसी विधान	आर्यिका गुरुमती माता जी	100/-
27.	श्री शान्तिनाथ विधान	हिन्दी पद्यानुवाद पं. ताराचन्द जैन शास्त्री	15/-